अध्याय 4

HXQJ16

वैदिक काल

(आज से 3500 से 4000 वर्ष पूर्व)

चित्र–4.1

पिछले अध्याय में हमने सिंधु या हड़प्पा संस्कृति के बारे में जाना। उसके बाद हम सिंधु–सरस्वती नदियों के मैदान में पुनः एक नई संस्कृति का विकास होते देखते हैं। इसे वैदिक संस्कृति कहते है। वैदिक संस्कृति को विकसित करनेवाले अपने आपको आर्य कहते थे। आर्य शब्द का अर्थ होता है– श्रेष्ठ या सुसंस्कृत!

HXZF2T

वैदिक साहित्य

वैदिक साहित्य विश्व का प्राचीनतम साहित्य है। ये व्यापक ज्ञान से पूर्ण हैं। इस प्रकार के साहित्य कहीं भी देखने के लिए नहीं मिलते हैं। वेदों की भाषा प्राचीन संस्कृत है। वेद चार हैं–

1.ऋग्वेद, 2.यजुर्वेद, 3. सामवेद, एवं 4. अथर्ववेद। संपूर्ण वैदिक साहित्य को "श्रुति" साहित्य कहा जाता है (श्रुति यानि सुना गया)। श्रुति परम्परा में गुरु द्वारा शिष्य को मौखिक रूप से वेद मंत्र सिखाए जाते हैं। सुनकर शिष्य सस्वर पाठकर स्मरण करते हैं। इस तरह यह ज्ञान पीढ़ी–दर–पीढ़ी सावधानी पूर्वक हस्तांतरित होता रहा है।

वैदिककाल को हम दो भागों में बाँट सकते हैं–

1. ऋग्वैदिक या पूर्व–वैदिक काल ।
2. उत्तर–वैदिक काल ।

इन दोनों कालों की विशेषताओं का उल्लेख हम आगे करेंगे ।

ऋग्वैदिक या पूर्व–वैदिक काल–

आर्थिक जीवन

ऋग्वैदिक काल में लोग सप्तसिंधु प्रदेश में रहते थे। सप्तसिंधु का अर्थ है– सात नदियाँ, जो सिंधु नदी और उनकी सहायक नदियों का क्षेत्र है।

इन क्षेत्रों को मानचित्र 4.1 में पहचानें तथा बताएँ इनमें कौन–कौन–सी नदियाँ सम्मिलित है?

ऋग्वेद

ऋग्वेद विश्व का सबसे प्राचीनतम ग्रंथ हैं। इसके मंत्रों को "सूक्त" कहा जाता है। सूक्त का अर्थ है– अच्छी तरह से बोला गया। इन सूक्तों में देवी–देवताओं की स्तुति की गई है। इसके अध्ययन से हमें उस समय की विस्तृत जानकारी मिलती है।

ekufp= 4-1

वैदिक काल के लोगों का प्रमुख व्यवसाय पशुपालन था। वे खेती भी करते थे, जौ उगाते थे लेकिन खेती उनका प्रमुख व्यवसाय नहीं था। गायें उनकी मुख्य पूंजी थीं। वे गायों की पूजा करते थे और गायों से दूध, मक्खन, घी आदि प्राप्त करते थे। उनका एक अन्य उपयोगी पशु घोड़ा था जिसे वे रथों में जोतते थे। इनके अलावा वे भेंड़–बकरी और कुत्ते भी पालते थे। वे पशुओं को चारागाह में चराते थे। ये चारागाह संभवतः उनके सामूहिक अधिकार में थे। वे अपने पशुओं के लिए चारा कम पड़ने पर नई जगह में जाकर बस जाते थे।

रथकार या लकड़ी के रथ बनानेवाला उनका महत्वपूर्ण कारीगर था। आर्य महिलाएँ सूत कातती थीं और कपड़े भी बुनती थीं।

रहन–सहन

इस काल में आर्यों का जीवन सीधा–सादा एवं सरल था। वे लकड़ी एवं मिट्टी के घरों में रहते थे। अपनी गायों के लिए बड़ी–बड़ी गौशालाएँ बनाते थे। उनके भोजन में दूध, दही, मक्खन, छांछ, घी, गेहूँ, जौ, मांस आदि प्रमुख रूप से शामिल थे।

पिता परिवार का मुखिया होता था । समाज में पुरूषों का अधिक महत्व था । वैदिक समाज मे महिलाओं को सम्मान प्राप्त था। वे यज्ञ जैसी धार्मिक क्रियाओं में पुरूषों के साथ भाग लेती थी । इस समय महिलाएँ शिक्षित होती थी। कई महिलाओं ने वेदों के सूक्तों की रचना भी की है ।

वैदिक काल के लोगों के भोजन एवं हमारे भोजन मे क्या–क्या समानताएँ एवं असमानताएँ हैं ?

समाज

वैदिक काल में समाज का प्रमुख आधार परिवार होता था । एक गाँव या बस्ती में कई परिवार के लोग रहते थे । वे सभी एक दूसरे के रिश्तेदार होते थे । ऐसे कई गाँव के लोगों को मिला कर जन बनता था । उस समय ऐसे कई जन थे जैसे–पुरुजन, कुरुजन, यदुजन आदि

क्या आज भी एक गाँव के सभी लोग एक दूसरे के रिश्तेदार होते है ?

उन दिनों वैदिक लोगों के अलावा कई ऐसे लोग भी थे, जो संस्कृत नहीं बोलते थे। उनका रहन–सहन, आचरण आदि वैदिक लोगों से अलग था । इन्हे वैदिक लोग दास, दस्यु या पणि कहते थे। वैदिक जन और इन लोगों के बीच कभी–कभी युद्ध भी होते थे। लेकिन वे एक ही स्थान में रहने के कारण एक दूसरे की बातें भी सीखने लगे थे। उनमें मेल–मिलाप भी होने लगा था। ऋग्वैदिक कालीन समाज में जाति–पांति या छुआ–छूत जैसी बुराइयाँ नहीं थी। सभी लोग समान माने जाते थे।

राजा

ऋग्वेद से पता चलता है कि उन दिनों जन के सभी पुरूष मिलकर अपना राजा चुनते थे। राजा का काम युद्ध में नेतृत्व करना, यज्ञ करना और लोगों की समस्याओं का निपटारा करना था। तब राजा का पद वंशानुगत नहीं होता था, अर्थात् पिता के बाद पुत्र ही राजा नहीं बन सकता था। राजा को सभी महत्वपूर्ण निर्णय सभा के सदस्यों की सलाह से लेना होता था। इसलिए वह अपने जन पर मनमानी नहीं कर सकता था । इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि वैदिक जनों की शासन व्यवस्था गणतांत्रिक व्यवस्थाओं पर आधारित थी ।

1. आप जानते है कि आजकल गाँव या शहर से संबंधित महत्वपूर्ण निर्णय कहाँ लिए जाते है?
2. आज की शासन व्यवस्था कैसी है ?

युद्ध

कभी–कभी पशुओं या चारागाहों के लिए जन एक दूसरे से युद्ध करते थे उनकी कोई स्थाई सेना नहीं होती थी । आवश्यकता पड़ने पर जन के सभी पुरूष मिलकर युद्ध करने जाते थे । युद्ध में राजा उनका नेतृत्व करता था । हारे हुए लोगों के पशु ,धन–सम्पदा, चारागाह आदि विजेता राजा अपने जन

के लोगो मे बाँट देता था । समय–समय पर जन के लोग अपने राजा को भेंट भी देते थे, जैसे– दूध, घी, अनाज, आभूषण, गाय आदि । राजा इसमें से एक हिस्सा स्वयं रख लेता था और बाकी हिस्सा अपने जन के सभी लोगों में बाँट देता था ।

जन के लोग राजा को भेंट क्यों देते होंगे ?

देवी–देवता व यज्ञ

वैदिक लोग समय–समय पर अपने देवी–देवताओं को प्रसन्न करने के लिए यज्ञ करते थे। वे अपने देवताओं से जीवन में खुशहाली, संतान, गायें, घोड़े, रोगमुक्ति और युद्ध में विजय की प्रार्थना करते थे। उनके प्रमुख देवता इंद्र, अग्नि, वरूण, सोम आदि थे। वे यज्ञ में अग्निकुंड के माध्यम से दूध, दही, घी, जौ आदि देवताओं को समर्पित करते थे। साथ में उनकी स्तुति में वैदिक सूक्तों का वाचन भी होता था।

वैदिक सूक्तों में देवताओं की स्तुति के अलावा प्रकृति का वर्णन, विश्व की उत्पत्ति, संबंधित विचार भी सम्मिलित हैं। वैदिक संस्कृति की सबसे बड़ी देन इस प्रकार है –

1. संस्कृत भाषा :– संस्कृत भारत की अधिकांश भाषाओं की जननी है।
2. वैदिक साहित्य :– ये भारत की सबसे प्राचीन साहित्य हैं।
3. गणतांत्रिक परम्पराएँ :– छोटे–छोटे जनपदों का युग।

उत्तरवैदिक काल

उत्तरवैदिक काल वह काल था जब यजुर्वेद, सामवेद एवं अथर्ववेद की रचना हुई। इस समय वैदिक संस्कृति सिंधु–सरस्वती नदियों के क्षेत्र से आगे बढ़कर गंगा–यमुना नदी के मैदान तक फैल चुकी थी। इस काल में कृषि की उन्नति के कारण नए उद्योग–धंधों का भी विकास हुआ। इससे राज्यों का बनना और विकास होना भी शुरू हो गया ।

जनपद

जन के लोग जिस क्षेत्र में निवास करते थे वह उनको जनपद कहा जाने लगा । जैसे–कुरुजनपद, पांचाल जनपद, सूरसेन जनपद आदि।

कृषि का विकास और भौतिक समृद्धि

उत्तर वैदिक काल में कृषि की उन्नति हुई। किसान कई प्रकार के अन्न का अधिक मात्रा में उत्पादन करने लगे, जैसे– चावल, गेंहू, तिलहन, दाल आदि।

खेती की उन्नति के कारण वैदिक कालीन समाज में भौतिक समृद्धि दिखाई देने लगी। इस समय नए–नए आभूषण, चमड़े की चीजें, लकड़ी की चीजें बनानेवाले कुशल कारीगर होने लगे। इसके साथ ही विभिन्न धातुओं का उपयोग लोगों के जीवन में बढ़ने लगा। विशेष रूप से वे लोहे का उपयोग करने लगे थे। इसे वे कृष्ण अयस्क या काला धातु कहते थे। इन सबकी जानकारी हमें वैदिक ग्रंथों से मिलती है। खुदाई से उस समय की चीजें जैसे मिट्टी के बर्तन, लोहे की औज़ार आदि चीजें मिली है।

उत्तर वैदिक काल में कौन–कौन से उद्योग धंधे विकसित हुए ?

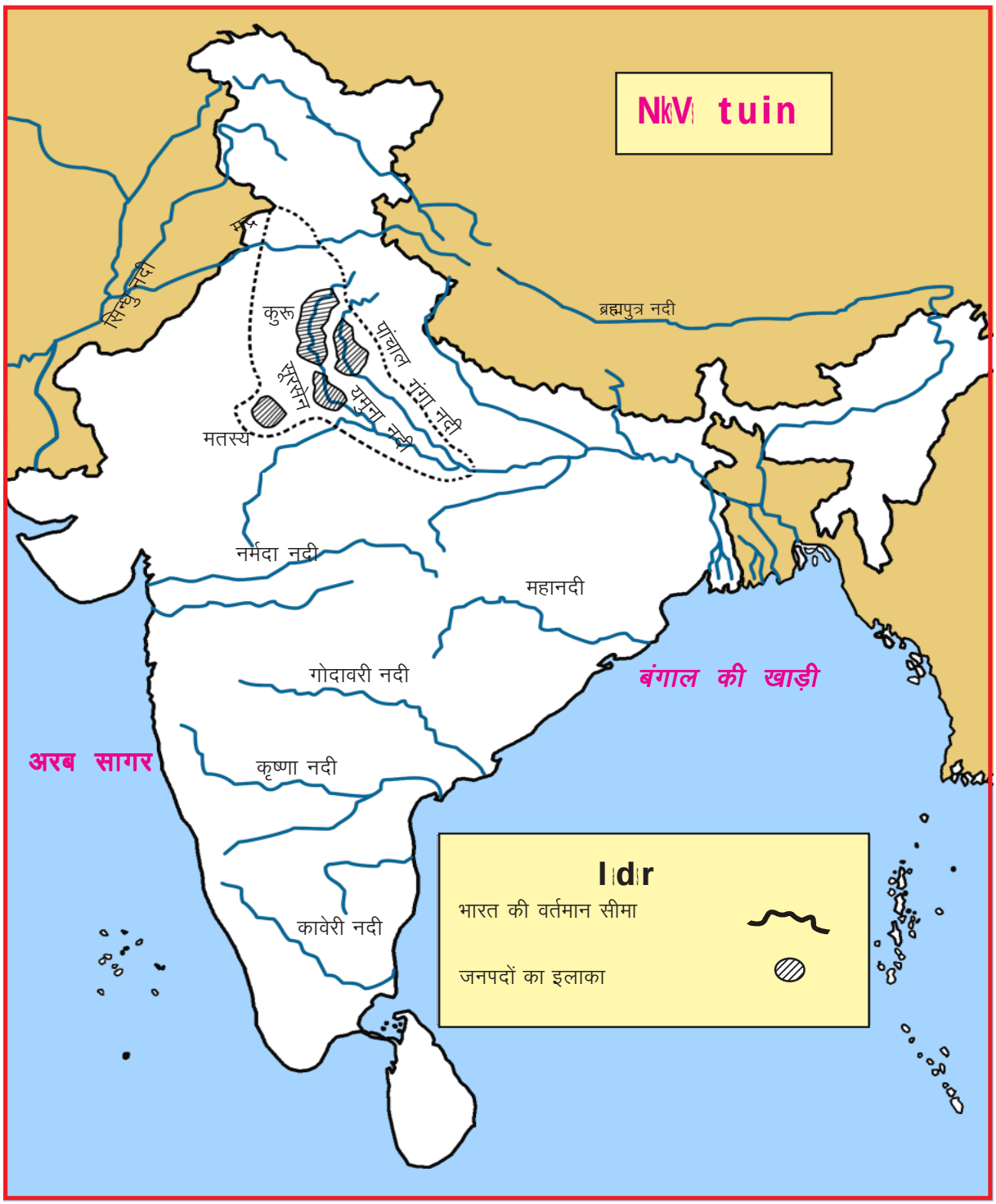

मानचित्र 4.2

मानचित्र 4.2 देखकर जनपदों को पहचानें। ये जनपद किन नदियों के किनारे बसे थे ?

समाज और धर्म

वैदिक काल में संयुक्त परिवार का प्रचलन था। सभी भाई व कई पीढ़ी के लोग एक ही परिवार

में साथ–साथ रहते थे। सबसे बुजुर्ग पुरूष परिवार का मुखिया होता था। उसे गृहपति कहते थे। सभी लोग उसकी बात मानते थे।

वैदिक साहित्य के अनुसार प्रत्येक मनुष्य का जीवन चार अवस्थाओं में बँटा था जिसे आश्रम–व्यवस्था कहा जाता था। इनमें पहला था ब्रह्मचर्य आश्रम– इसमें मनुष्य बाल्यावस्था में शिक्षा प्राप्त करता था। दूसरा, गृहस्थ आश्रम– इसमें मनुष्य विवाहकर परिवार चलाता था। तीसरा, वानप्रस्थ आश्रम–इसमें मनुष्य परिवार से दूर रहकर चिंतन–मनन करता था। चौथा, सन्यास आश्रम–इसमें मनुष्य घर परिवार से दूर होकर तीर्थ–यात्रा करते हुए जीवन का अंतिम समय व्यतीत करता था।

क्या आपका परिवार भी संयुक्त परिवार है ? चर्चा करें।

उत्तर वैदिक काल में ज्यादातर गृहपति खेती और पशुपालन करते थे। इन्हें वैश्य कहा जाता था। इन गृहपतियों के आस–पास उनकी सेवा करनेवाले सेवक लोग भी रहते थे। गृहपति समय–समय पर राजा को भेंट दिया करते थे। जिससे राजा और राज्य का खर्च चलता था।

पूरे जन के मुखिया को राजा कहते थे। उसके रिश्तेदार और सहयोगियों को राजन्य कहा जाता था। उनका मुख्य काम जनपद की रक्षा करना था। लेकिन युद्ध के समय पहले की तरह ही जन के सारे पुरूष सम्मिलित होते थे।

उत्तर वैदिक–साहित्यों से पता चलता है, कि राजा और राजन्य बड़े–बड़े यज्ञ करने लगे थे। जैसे– अश्वमेघ यज्ञ, राजसूय यज्ञ आदि। जो कई महीने चलते थे। इनमें बहुत धन खर्च होता था। इन यज्ञों को ब्राह्मण या पुरोहित संपन्न कराते थे। ब्राह्मणों को धन, गायें आदि दान में प्राप्त होते थे। उनकी मान्यता थी कि इन यज्ञों से जनपद में खुशहाली आएगी तथा राजा शक्तिशाली बनेगा।

उत्तर वैदिक काल में समाज चार वर्णों में बँटा था। पहला ब्राह्मण वर्ण, जो यज्ञ करवाते थे और वेद पढ़ते–पढ़ाते थे। दूसरा क्षत्रिय वर्ण, जो जनपद में शासन और उसकी रक्षा करते थे। तीसरा वैश्य वर्ण, जो जनपद में खेती और पशुपालन करते थे। चौथा शूद्र वर्ण, जो सेवा–कार्य करते थे। वर्ण–व्यवस्था के कारण ही आगे चलकर समाज में जाति–व्यवस्था पनपी।

महाकाव्यों की रचना

हमारे देश के दो महाकाव्यों रामायण और महाभारत की रचना उत्तर वैदिक काल की बातों पर आधारित है। महर्षि वाल्मीकि द्वारा रामायण की रचना कोसल जनपद की बातों पर आधारित है। इसी प्रकार महर्षि व्यास द्वारा महाभारत की रचना कुरू, पांचाल और सूरसेन जनपद की बातों पर आधारित है। ये दोनों महाकाव्य भारतीय संस्कृति के आधार हैं। इन महाकाव्यों ने मानव जीवन के सभी क्षेत्रों को प्रभावित किया है। इनके अध्ययन से हमें इस समय के इतिहास की जानकारी मिलती है।

अभ्यास के प्रश्न

(अ) खाली स्थान को भरिए–

क. वेदों की भाषा ———————— है ।

ख. संसार का सबसे प्राचीन ग्रंथ ————————————है ।

HY9B4G

ग. आर्य———————— धातु से परिचित थे।
घ. ऋग्वैदिक काल में सभी लोग ———————— माने जाते थे।
इ. राजा को जन के लोग ———————— देते थे।

(ब) उचित संबंध जोड़िए –

(क)	(ख)
1. सप्तसिंधु प्रदेश	राजन्य
2. रामायण	आर्य
3. महाभारत	वाल्मिकी
4. राजा के रिश्तेदार	व्यास

(स) प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. वेदों के नाम बताइए।
2. आर्यो के प्रमुख देवी–देवताओं का नाम बताइए।
3. वैदिक काल में आश्रम व्यवस्था कैसी थी ?
4. वैदिक काल के समाज में वर्ण व्यवस्था कैसी थी ?
5. आर्यों के रहन–सहन का वर्णन कीजिए।
6. वैदिक संस्कृति की प्रमुख देन का उल्लेख कीजिए।
7. ऋग्वैदिक काल में पशुपालन की विशेषताएं बताइए।
8. उत्तर वैदिक काल में कृषि एवं उद्योग–धंधों के विकास का वर्णन कीजिए।
9. ऋग्वैदिक काल में महिलाओं की स्थिति कैसी थी।
10. उत्तर वैदिक काल में परिवार की विशेषताएँ बताइए।

परियोजना कार्य

1. कालीदास की रचनाओं का पता करें और नाम लिखें।
2. आपके गाँव/शहर में किस–किस वर्ग के लोग रहते हैं? वे अपने त्यौहारों व उत्सवों को किस प्रकार मनाते हैं? क्या इन उत्सवों में अन्य वर्ग के लोग शामिल होते हैं?
3. आप अपने गाँव के बुजुर्गों से वनस्पतिक औषधियों के बारे में पता करें और उनके गुणों को लिखें।